मैंने सब कुछ सोच लिया है, आना चाहो आ जाओ।
मेरी तपती पेशानी ने तेरी नरम हथेली को,
करवट-करवट याद किया है, आना चाहो आ जाओ।
दर्द की दुनिया, ग़म का वतन है, शहर है नाउम्मीदी का,
बन्दे का, बस, यही पता है, आना चाहो आ जाओ।

7 ख़ौफ़ से हो या ख़ुदग़र्ज़ी से, हर सजदे को ख़ता समझ,
ख़ुद्दारी से जीना है तो, सिर्फ़ ख़ुदा को ख़ुदा समझ।
फ़क़त किनारे बैठे-बैठे, लहरों से मत पूछ सवाल,
डूब के ख़ुद गहरे पानी में, पानी का फ़लसफ़ा समझ।
खोल तो खिड़की, झाँक तो बाहर, छोड़ घुटन की चादर को,
क्या कहते हैं काले बादल, क्या गाती है हवा, समझ!
ढलती शाम, सर्द पुरवाई, ख़ुद पर इतना जुल्म न कर,
ठीक सामने मयख़ाना है, मौसम का मशवरा समझ।
नींद, सुकूँ, मस्ती, हमराही, क्या क्या तूने खोया है,
दौलत पर इतराने वाले, दौलत अपनी सज़ा समझ।
कुछ बीवी से झगड़ा कर ले, कुछ बच्चों से बातें कर,
औंधे मुँह खामोश पड़ा है, घर को मत मक़बरा समझ!

8 जलता सूरज मुझे रास आता रहा,
बाप का जब तलक सर पे साया रहा।
कोई सहरा सा क़ाबिज रहा रूह पर,
मयकदे पी गया फिर भी प्यासा रहा।
फ़ैसला उसका सुन के मैं ख़ामोश था,
लोग पूछा किए-क्या रहा, क्या रहा?
सिरफिरा गर नहीं है तो क्या है ख़ुदा,
जो बनाता रहा वो मिटाता रहा!
मंज़िलों की अना मुझ पे हँसती रही,
फ़ासला मेरी खिल्ली उड़ाता रहा।
गाँव में था ही क्या, शहर में क्या नहीं,
गाँव फिर भी मुझे याद आता रहा।
दर्द मुझ पर मेहरबाँ रहा रात भर,
मेरे अशआर मुझ को सुनाता रहा।

9 गाँव की हर झोपड़ी के शाप झूठे हो गए,
उस हवेली के कंगूरे और ऊँचे हो गए।
आपकी चारागरी का शुक्रिया, चारागरो,
दर्द सारे नौजवाँ हैं, ज़ख्म बूढ़े हो गए।
कुछ न दिखता था अंधेरे में, मगर, आँखें तो थीं,
रोशनी ये कैसी आई, लोग अन्धे हो गए।
इक ज़माना था कि हम भी थे सुख़नवर लाजवाब,
बस्ती-ए-अहसास में पहुंचे तो गूँगे हो गए।

10 ज़िन्दगी कहती है अब तो, मयकशी मुमकिन नहीं,
मयकशी को छोड़ दूँ तो ज़िन्दगी मुमकिन नहीं!
ये तेरी आवाज़, मेरी बेबसी पर क़र्ज़ है,
मैं जहाँ हूँ अब वहाँ से, वापसी मुमकिन नहीं।
रेशमी रिश्तों की ज़ंजीरों से, घर में क़ैद हूँ,
शहर की सड़कों पे अब, आवारगी मुमकिन नहीं।
अक़्ल गुम, अहसास पागल, रूह ज़ख़्मी, दिल उदास,
इश्क़ के जंगल में कोई, रहबरी मुमकिन नहीं।

11 दरिया का पता ले लो, पर धार की मत पूछो,
इक शख़्स हूँ ज़िन्दा हूँ, फ़नकार की मत पूछो!
वाक़िफ़ हूँ अभावों से, वाक़िफ़ हूँ तनावों से,
मुफ़लिस हूँ, खबर मुझसे बाज़ार की मत पूछो!
सूखे हुए होंठों पर, प्यासों के फ़साने हैं,
बादल तो गरजते हैं, बौछार की मत पूछो!
ख़्वाबों की बुलन्दी से, जब-जब भी गिरा हूँ मैं,
हर बार बचा लेकिन, इस बार की मत पूछो!
शोलों की नदी तैरो, थोड़ा सा क़रीब आओ,
उस पार खड़े होकर, इस पार की मत पूछो!

12 किसी की आह का मारा, न जाने अब कहाँ होगा,
अभी टूटा था जो तारा, न जाने अब कहाँ होगा।
महकते गेसुओं की रात शायद सोचती होगी,
यहाँ सोया जो बंजारा, न जाने अब कहाँ होगा।
तिरी पलकों पे जिसको थरथराता छोड़ आया था,
वही इक बूंद भर पारा, न जाने अब कहाँ होगा।
सभी खुशियाँ, सभी सपने, बँटे रिश्तों की सरहद पर,
बची यादों का बँटवारा न जाने अब कहाँ होगा।

13 किसने जाना, किसने देखा, तीरगी के उस तरफ,
जाने कैसी ज़िंदगी हो ज़िंदगी के उस तरफ।
मरते दम इक रिन्द के होंठों पे ये अल्फ़ाज़ थे-
तिश्नगी ही तिश्नगी है मयकशी के उस तरफ़।
डूबकर भी तोड़ना था मुझको लहरों का ग़ुरूर,
काट फेंका मैंने अपना सर नदी के उस तरफ़।
तेरी नफ़रत को हक़ीक़त ही समझ लूँगा मगर,
झाँकने तो दे मुझे इस बेरुख़ी के उस तरफ।
मय पिला दे, छीन ले साक़ी मेरे होशोहवास,
मुन्तज़िर मेरा ख़ुदा है, बेख़ुदी के उस तरफ।
इस ग़लतफ़हमी में सदियों आदमी ज़िन्दा रहा,
अब कोई बेहतर सदी है, इस सदी के उस तरफ़।

14 लम्हों की पहचान बनाकर बरसों के ग़म छोड़ गये,
जाने वाले जाने कितनी आँखों को नम छोड़ गए।
बादल बन कर घिरे, बरस कर, नील गगन में बिखर गए,
मन की धरती पर यादों के भीगे मौसम छोड़ गए।
ख़ून के रिश्तों पर भारी थे चन्द रोज़ के ये रिश्ते,
दूर हुए तो अहसासों के कितने मातम छोड़ गए।
सुबह हुई तो चंदा जैसे तुम भी कहीं रूपोश हुए,
यादों के फूलों पर अपनी याद की शबनम छोड़ गए।
मरते दम तक साथ रहेंगी उन साज़ों की आवाज़ें,
जो अब हमसे दूर हैं, लेकिन, अपनी सरगम छोड़ गए।
अपनी मर्ज़ी से बिछड़े हो, लेकिन, यही ग़नीमत है,
फिर मिलने के वादे वाला थोड़ा मरहम छोड़ गए।